for Industrial and Financial Reconstruction (BIFR). In terms of the Draft Scheme, the company is expected to wipe off its accumulated losses by 2003-2004. The share of the State Government according to the Draft Scheme is as follows:

(1) To agree to waive sales tax differential for the period April, 1993 to March, 1994.

(2) The continue charging concessional sales tax for fuel efficient vehicles of SML at par with other Indo-Japan competitors for the period of rehabilitation.

Office of the Chief Vigilance Commissioner

457. SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a key post has been lying unoccupied in the Office of the Chief Vigilance Commissioner;

(b) if so, the reasons therefor stating the name of the post and time since it is lying vacant; and

(c) the steps taken/likely to be taken by Government to fill the said post at the earliest?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PENSIONS (SMT. MARGARET ALVA): (a) to (c) The post of Central Vigilance Commissioner is lying vacant since 3.4.1995. Matter has received attention of Government and action has already been initiated to fill up the post at the earliest.

Dispute between SSIs and Exporters over Sandalwood

458. SHRI V. HANUMANTHA RAO: Will the Minister of INDUSTRY be pleased to state:

(a) whether there is an on-going dispute between small-scale industries using sandalwood dust and sandalwood and the exporters who bought sandalwood;

(b) what is the area of dispute;

(c) whether the same has been resolved;

(d) whether any of the sandalwood in question is from Andhra Pradesh; and

(e) if so, the details thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INDUSTRY (SHRI M. ARUNACHALAM): (a) No, Sir. The export of sandalwood in any form, but excluding fullyfinished handicrafts made of out sandalwood products are prohibited. There are no exporters of sandalwood.

(b) to (c) Do not arise in view of (a) above.

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन

459. **श्री दिग्विजय सिंह:** क्या **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन का एक शिष्टमंडल हाल ही में प्रधान मंत्री से मिला है और उसने एक मांग पत्र प्रस्तुत किया है, और

(ख) यदि हां, तो उक्त शिष्टमंडल की मांगें क्या हैं और उनकी मांगों को पूरा करने के लिए सरकार क्या और कब तक कार्यवाही करेगी।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० सी० सिल्वेरा): (क) जी, हां।

(ख) मांगों की एक प्रति संलग्न है। कुछ मांगों पर कार्रवाई आरंभ की जा चुकी है।

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन

"धन्वन्तरि भवन"
मार्ग 66, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-110 026

दिनांक: 26.6.95

माननीय श्री पी० वी० नरसिंहराव जी,
प्रधान मंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली।

परम श्रद्धेय प्रधान मंत्री जी,

आपके प्रधान मंत्रित्व काल में आयुर्वेद तथा देशी चिकित्सा पद्धतियों के नये विभाग की स्थापना एक ऐतिहासिक घटना है जिसके लिये सम्पूर्ण आयुर्वेद जगत आपका ऋणी है। अनेक वर्षों से चली आ रही वैद्य

समाज की इस मांग को आपने मूर्तरूप दिया है इसके लिए बारम्बार आपका सादर अभिनन्दन है।

नवीन विभाग द्वारा कार्यारम्भ

नये विभाग की स्थापना से कार्य का विस्तार होना अवश्यम्भावी है। विभाग द्वारा उचित कार्य सम्पादन हेतु आवश्यक अवसंरचना तथा आर्थिक संसाधन तत्परता-पूर्वक उपलब्ध कराने की ओर हम आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

शिक्षण स्तर की प्रोनति

आयुर्वेद के शिक्षण-प्रशिक्षण की वर्तमान व्यवस्था सन्तोषजनक नहीं है। इसमें अत्यधिक सुधार की आवश्यकता है। नये विभाग द्वारा देश के सभी सरकारी व गैर सरकारी आयुर्वेदिक कालेजों को पर्याप्त आर्थिक अनुदान देकर भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद द्वारा निर्धारित स्तर के अनुरूप उन्नत करने के कार्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यह कार्य पूरा होने तक नये कालेजों का खुलना कानूनन बन्द किया जा सकता है।

संस्कृत

आयुर्वेद में प्रवेशार्थ संस्कृत का ज्ञान अनिवार्य है। संस्कृत एक समृद्ध भाषा है जो कम्प्यूटर के लिए भी उपयुक्त मानी गई है। भारत की प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर भी संस्कृत में ही सुरक्षित है। अतः प्रत्येक भारतीय के लिए इस भाषा का ज्ञान अत्यावश्यक है। पूरे देश में पांचवीं कक्षा से संस्कृत को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाने की व्यवस्था होनी चाहिए। तभी आयुर्वेद के लिए योग्य संस्कृतज्ञ प्रवेशार्थी उपलब्ध हो सकेंगे।

ध्यान योग का महत्व

सम्पूर्ण विश्व की रूचि भारतीय ध्यान योग के प्रति बढ़ रही है क्योंकि वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा सिद्ध हो चुका है कि ध्यान योग से मनुष्य की मानसिक एवं शारीरिक दक्षता बढ़ जाती है। अतः प्राथमिक स्तर से ही शिक्षा में ध्यान योग का समावेश सम्पूर्ण समाज का बौद्धिक एवं आध्यात्मिक स्तर उन्नत करने में उपयोगी होगा। आयुर्वेद महाविद्यालयों में तो ध्यान योग का अभ्यास अवश्य अनिवार्य किया जाना चाहिये।

आयुर्वेदीय अनुसंधान

आयुर्वेदीय अनुसंधान को भी नई दिशा देना अपेक्षित है जिसमें उसकी व्यावहारिक उपयोगिता पर विशेष बल दिया जाय ताकि उसका पूरा लाभ रुग्ण जनता को तत्काल मिल सके।

जड़ी बूटी संरक्षण एवं मानकीकरण

सर्पगन्धा, गुग्गुल, शंख पुष्पी, नीम, अश्वगन्धा जैसी अनेकों उपयोगी वनस्पतियों की अन्तर्देशीय आवश्यकता का आकलन कर उनके निर्यात को रोकना चाहिये तथा देश में कृषि तथा टिशू कल्चर आदि विधियों से इनके पर्याप्त उत्पादन के लिये नये विभाग को उचित कदम अविलम्ब उठाने चाहिये। औषधियों के मानकीकरण के लिये गाजियाबाद स्थित "फार्मास्युटिकल लेबोरेट्री आफ इंडियन मेडिसिन" को समुन्नत करना अभीष्ट है ताकि उत्तम कोटि की आयुर्वेदीय औषधियां सुलभ हो सकें।

स्कूल स्तर पर स्वास्थ्य शिक्षा

देश में जन स्वास्थ्य के सामान्य सुधार हेतु प्राथमिक कक्षाओं से ही छात्रों को आयुर्वेदीय स्वास्थ्य नियमों, घरेलू जड़ी बूटियों तथा मसालों आदि की उपयोगिता का परिचय दिया जाए ताकि स्कूली शिक्षा समाप्त होने तक सभी विद्यार्थी स्वास्थ्य के सामान्य नियमों एवं आयुर्वेद की सार्थकता से परिचित हों।

विदेशों में आयुर्वेद का प्रचार

हमारे जो व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल विदेशों में जाते हैं उनकी चर्चाओं में आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों, औषधियों के आयात निर्यात की चर्चा भी सम्मिलित हो तथा ततत देश की पारम्परिक चिकित्सा पद्धति से उसका समन्वय कर आयुर्वेद चिकित्सा को स्थापित करने का प्रयास हो।

विदेशों में भारतीय राजदूत ततत् देश के भारतवासियों से सम्पर्क स्थापित कर उन्हें आयुर्वेद चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने की मांग के लिए प्रेरित करें।

आपके प्रधान मन्त्रित्व के उपलब्धियों भरे चार वर्षों की शानदार पूर्ति के उपलक्ष्य में हार्दिक अभिनन्दन सहित।

हम हैं आपके

ह०—

(वैद्य शिवकरण शर्मा छांगाणी)
अध्यक्ष
अ०भा० आयुर्वेद महासम्मेलन

ह०—

(वैद्य देवेन्द्र त्रिगुणा)
महामंत्री
अ०भा० आयुर्वेद महासम्मेलन

ह०—

(कविराज गौरी लाल चानना)
अध्यक्ष
नि०भा० आयुर्वेद विद्यापीठ

ह० —

(वैद्य ब्रज बिहारी मिश्र)
महामंत्री
नि०भा० आयुर्वेद विद्यापीठ